❋ 25 मई 2014 (7-1-78) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] विदेशी आत्माओं में एक विशेषता के कारण विशेष बाप का ज्यादा लव है। कौन सी विशेषता? जैसे इण्डिया (भारत) में एक खेल खेलते हैं तो कई चीज़ों को कपड़े के अन्दर छिपाकर रखते हैं, ऊपर से कपड़े का कवर डाल देते हैं और बच्चों को कहते हैं कवर उतार कर सब चीज़ों को देखो फिर कवर लगा देते हैं, फिर बच्चों की बुद्धि का पेपर (परीक्षा) लेते हैं कि कौन-कौन सी चीज़ें थी और कितनी चीज़ें थी ? फिर जो जैसी चीज़े थी, जितनी थी उतनी ही याद कर लेते हैं व सुनाते हैं तो उनको नम्बर मिलते हैं। यह बुद्धि का खेल बच्चों को कराया जाता है। ऐसे ही विदेशी बच्चे भी भिन्न धर्म, भिन्न फिलासॉफी, भिन्न प्रकार के रहन-सहन-इस कवर के अन्दर छिपे हुए बाप को, जो है, जैसा है, वैसे जान लिया इस बुद्धि की कमाल के कारण विदेशी बच्चों से स्नेह है।

2] सदैव यही खुशी के गीत गाते रहो कि जो पाना था, वह पा लिया। इस खुशी में रहने से किसी भी प्रकार की उलझन व उदासी आ नहीं सकती अर्थात् माया प्रूफ हो जायेंगे। ऐसे मायाप्रूफ बन जाओ जो आपका एग्जाम्पुल बापदादा सभी को दिखावे।

3] भारत की आत्मायें आप लोगों को देख समझेंगी कि इन्होंने बाप को पहचाना लेकिन हम लोगों ने नहीं पहचाना। आपकी पहचानी हुई सूरत को देख भारतवासियों को पश्चाताप होगा कि हमने अपने भाग्य को खो दिया इसलिए आप सब सर्विस के प्रति निमित्त हो।

4] जैसे-जैसे विनाश का समय आता जायेगा तो वातावरण को देख आप सन्देश देने वालों को ढूढेंगे कि यह कौन से फरिश्ते थे, जिन्होंने हमें बाप का परिचय दिया। सर्विस में जहाँ भी पाँव रखा है, वहाँ सफलता न हो, जिन्होंने हमें बाप का परिचय दिया। सर्विस में जहाँ भी पाँव रखा है, वहाँ सफलता न हो, यह हो नहीं सकता। कोई धरती जल्दी ही फल देती है, कोई धरती फल देने में समय लेती हैं, लेकिन फल जरूर देती है।

❋ योग-

1] ----

❋ धारणा-

1] माया को चैलेन्ज करते हो कि आओ और विदाई ले जाओ। माया का आना अर्थात् अनुभवी बनना इसलिए माया से कभी घबराना नहीं। घबरायेंगे तो वह भी विकराल रूप धारण करेगी। घबरायेंगी नहीं तो नमस्कार करेगी।

2] कभी भी लक्ष्य कमजोर नहीं रखना। सदा श्रेष्ठ लक्ष्य रखना कि हम ही कल्प पहले वाले विजयी थे और सदा रहेंगे। तो सदा अपने को विजयी रत्न ही अनुभव करेंगे।

3] जैसे स्थूल वस्त्र उतार देते हैं वैसे यह देह-अभिमान के वस्त्र सेकण्ड में उतारने हैं। जब चाहें धारण करें, जब चाहें न्यारे हो जाएं। लेकिन यह अभ्यास तब होगा जब तक किसी भी प्रकार का बन्धन नहीं होगा। अगर मन्सा संकल्प का भी बंधन हहै तो डिटैच हो नहीं सकेंगे। जैसे कोई तंग कपड़ा होता है तो सहज और जल्दी नहीं उतार सकते हो। इस प्रकार से मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध में अगर अटैचमेण्ट है, लगाव है तो डिटैच नहीं हो सकेंगे।

4] जैसा संकल्प किया, वैसा स्वरूप हो जाए। संकल्प के साथ-साथ स्वरूप बन जाते हो या संकल्प के बाद टाइम लगता है स्वरूप बनने में? संकल्प किया और अशरीर हो जाओ। संकल्प किया मास्टर प्रेम के सागर की स्थिति में स्थित में स्थित हो जाओ और वह स्वरूप हो जाए।

❋ सेवा-

1] विदेश के रहने वाले बच्चों को यह भी एक विशेष लिफ्ट है जो स्वयं को विश्व के आगे प्रख्यात कर बाप का परिचय देते हैं– ऐसी सर्विस करने से एक्स्ट्रा मार्क्स मिल जायेंगी। ऐसी सर्विस की है या करनी है?

2] जिस भी आत्मा को कोई देखे तो हर चेहरे से बाप द्वारा प्राप्त हुई अविनाशी खुशी, अतीन्द्रिय सुख की, अविनाशी शान्ति की झलक दिखाई दे। आप सबके चेहरे बाप द्वारा प्राप्त हुई प्रॉपर्टी दिखाने के आईने बन जायेंगे। ऐसी सर्विस करने वालों को बाप-दादा द्वारा विशेष मार्क्स का इनाम मिलेगा। यह सर्विस तो सहज है ना या मुश्किल है ?